पल्लव वंश

10th lecture.

BA HONS.

Mamta Rani
[History department]
SN.SRK.S. COLLEGE,
SAHARSA

Scanned with CamScanner

पल्लव वंश

→ दक्षिण भारत के इतिहास मे चोल, चालुक्य और पल्लव तीन महत्वपूर्ण वंशो का नाम शामिल है।

पल्लव वंश को द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा का वंशज माना गया है। समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार 350 ई० - 575 ई० के बीच पल्लव वंश के 16 शासक हुए जिसमे समुद्रगुप्त ने अपने अभियान के क्रम मे विष्णुगोप को पराजित किया था। यह लोग स्वतंत्र शासक नही थे। इतिहासकारो के अनुसार -

"यह लोग कुषाणो के सामंत थे"

→ दक्षिण भारत मे द्रविड़ शैली के अन्तर्गत इन लोगो ने क्षेत्रीय शैली को जन्म दिया जिसके लिये याद किया जाता है —

शासक	शैली
महेन्द्रवर्मन - I	महेन्द्र शैली
नरसिंहवर्मन - I	मामल्ल शैली
नरसिंहवर्मन - II	राजसिंह शैली
नंदीवर्मन	नंदीवर्मन शैली

→ 350 ई० से लेकर 897 ई० के बीच पल्लव वंश के अन्तर्गत निम्नलिखित शासको ने शासन किया था जिसमे कुछ प्रमुख का वर्णन यहाँ किया जा सकता है —

⇒ बप्पदेव → पल्लव वंश का संस्थापक था।
यह सामंत के रूप मे शासनकर रहा था।
इसने एक छोटे से क्षेत्र मे अपनी राज्य को स्थापित किया था।

Scanned with CamScanner

⇒ सिंहविष्णु (576-600) AD →
यह पल्लव वंश के प्रथम स्वतंत्र शासक थे। इन्होंने चोलो का क्षेत्र तोण्डमंडलम् को जीत लिया। इस उपलक्ष्य मे अवनी सिंह की उपाधि धारण किया।
- इसको पल्लव वंशका वास्तविक संस्थापक कहागया है।
- इसके समय मे चालुक्यो के साथ संघर्ष प्रारंभ हुआ जिसमे यह सफल हुए। इसने महाबलिपुरम् में आदिवराह गुफा का निर्माण कराया जिससे स्पष्ट होता है कि वह वैष्णव। भागवत धर्म का अनुयायी था।

- इसने कांची को अपनी राजधानी बनाया था।
- इसके राजदरबार मे प्रसिद्ध विद्वान भारवि रहते थे जिन्होंने किरातार्जुनीय नामक ग्रंथ की रचना किया था।

⇒ महेन्द्रवर्मन - I [600-630] AD :-
इसने महेन्द्रवर्मन शैली को जन्म दिया था। चालुक्यो के साथ संघर्ष मे यह भी सफल रहा। इसने विचित्रचित्त, गुणभर, मत्तविलास आदि की उपाधि धारण किया था।
- इसने मत्तविलास प्रहसन की नामक ग्रंथ की रचना किया था।
- शैव धर्म के प्रसिद्ध संत और संगीताचार्य रुद्राचार्य के द्वारा निर्देशन मे संगीत शास्त्र की पुस्तक कुडुमियामलय की रचना किया गया था; जिससे स्पष्ट होता है कि यह शासक संगीत मे भी रुचि रखता था।

⇒ नरसिंहवर्मन - I (630-668) AD :-
यह इस पल्लव वंश के सबसे महत्वपूर्ण शासक थे। इनके बारे में कुरम

Scanned with CamScanner

दानपत्र अभिलेख और कशाकुडी अभिलेख से जानकारी मिलता है। यह शैव मामल्ल शैली का जनक था। इसने मामल्ल या महामल्ल की उपाधि धारण किया था। इसने पल्लव राज्य का सबसे अधिक विस्तार किया।

- इसने मामल्लपुरम / महाबलिपुरम नामक नगर का निर्माण कराया।
- इसने महाबलिपुरम मे रथमंदिर का निर्माण कराया।
- रथमंदिर को सप्तपैगोडा भी कहा जाता है. जो रथ के आकार का है और पाँच पांडव, द्रोपदी और गणेश को समर्पित है।

- इसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन - II को पराजित कर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण किया।

- इसने पुलकेशिन - II को पराजित करने के बाद उसके पीठ पर विजय शब्द अंकित कर दिया। यह युद्ध शूरमार और परमाण के युद्ध के नाम से विख्यात है।

- इसी शासक के समय में ह्वेनसांग ने कांची की यात्रा किया था।

⇒ महेन्द्रवर्मन - II (668-670) AD →

इसे मध्यम लोकपाल कहा गया है। इसने ब्राह्मणों की संस्था घटिका को दान दिया था। जहाँ पर शिक्षा-दीक्षा का कार्य भी होता था।

Scanned with CamScanner

⇒ परमेश्वरवर्मन - I [670-695] AD :-

शिक्षा के क्षेत्र में अधिक रुचि रखने के कारण विद्याविनीत की उपाधि दिया गया था। इसने महाबलिपुरम में गणेश मंदिर का निर्माण कराया।

⇒ नरसिंहवर्मन - II (695-728) AD :-

यह राजसिंह शैली का जनक था। इसने राजसिंह की उपाधि भी धारण किया था।

- इसने कांची में कैलाशनाथ मंदिर और महाबलिपुरम में समुद्रतटीय मंदिर और ऐरावतेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।
- दशकुमारचरित के लेखक दण्डिन इसके समकालीन थे।

⇒ अपराजित (879-897) AD :-

चोलवंश के आदित्य प्रथम ने इसको गद्दी से हटाकर इस वंश का अंतकर दिया।

=x=

Scanned with CamScanner